Globus Journal of Progressive Education
A Refereed Research Journal
Vol 5 / No2 / Jul-Dec 2015 ISSN: 2231-1335

स्वामी दयानन्द जी तथा डा0 भीमराव अम्बेडकर जी के शैक्षिक विचारों का तुलानात्मक अध्ययन।

*पूजा रानी

शिक्षा के विषय में:–

डा0 अम्बेडकर का विचार है कि शिक्षा के बगैर मुनष्य का जीवन नीरस है। शिक्षा ही उसको उसकी असली पहचान बनाने में सहायक है। शिक्षा अन्धकार को दूर करके इन्सान के दिल और दिमाग में प्रकाश का द्वीप जलाती है। शिक्षा के बिना मनुष्य पशु के समान है जो अपने अध्किारों के प्रति कभी भी जागरूक नहीं हो सकते जो समाज शिक्षा में वंचित हो वह कभी भी अपने समाज की उन्नति नहीं कर सकता और न ही स्वतंत्राता के लिए लड़ाई लड सकता है। शिक्षा के माध्यम से ही तानाशाही तथा भ्रष्टाचार को समाप्त किया जा सकता है तथा स्वाभिमान जागृत किया जा सकता है।

डा0 अम्बेडकर जी कहते है कि किसी भी वर्ग विकास के लिए यह आवश्यक है कि उसमें विकास करने की प्रवृति पैदा हो जाए तो अपने सामाजिक विकास के प्रति जागरूक और तत्पर नहीं रहते वे अपना विकास कभी भी नहीं कर सकते और न कोई अन्य उनका विकास कर सकता है। डा0 अम्बेडकर मानते है कि उन्हें स्वयं विकास के लिए प्रोत्साहित किया जाए। डा0 अम्बेडकर का मानना है कि यदि गुलाम को उसकी गुलामी का एहसास करा दिया जाए तो वह गुलामी से मुक्ति के लिए बगावत कर उठेगा। परन्तु यह बगैर शिक्षा के संभव नहीं है।

डा0 अम्बेडकर के शिक्षा दर्शन का आधर दलित शोषित समाज का विकास करना था अतः वह जीवन के हर पक्ष पर उनके विकास के लिए शिक्षा देते रहे है। स्वामी दयानन्द सरस्वती के अनुसार बालक बालिकाओं को आठ वर्ष की हो जाने पर उनके माता–पिता का कर्त्तव्य समाप्त हो जाता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस बात पर बल दिया कि बालक–बालिकाओं को शिक्षा के लिए गुरूवुफलों में भेजने की व्यवस्था करवाई जाए। स्वामी दयानन्द सहशिक्षा के प्रबल विरोधि थे लड़के और लड़कियों की शिक्षा में लगभग दो कोस का अंतर होना चाहिए। अध्ययन काल के 15 वर्षों तक लड़कों के लड़कियों से दर्शन तक नहीं होने चाहिए। स्वामी दयानन्द के अनुसार गुरूवुफल में छात्राों को एक समान वस्त्रा भोजन निवास व शिक्षा दी जानी चाहिए। वह चाहे राजवुफमार हो, चाहे राजवुफमारी चाहे गरीब हो या अमीर सब को एक समान शिक्षा दी जानी चाहिए। डा0 अम्बेडकर एवं स्वामी दयानन्द दोनों ही इस बारे में समान विचार–धरा रखते है। स्वूफल में छात्राों के साथ किसी भी प्रकार का भेद–भाव नहीं किया जाना चाहिए। स्वामी दयानन्द का मानना है कि विद्यार्थियों का जीवन तपस्यायुक्त होना चाहिए। ब्रह्मचार्य का पालन करना व मांस, गन्ध, मालारस, स्त्राी–पुरूष का संग प्राणियों की हिंसा, अंगों का मंदन, बिना निर्मित उम्दे इन्द्रियों का स्पर्श आंखों में अंजन, जुते और छत्रा को धरण नहीं करना चाहिए। विद्या अध्ययन करते समय छात्रा–छात्राओं को गुरूजनों का संबंध माता–पिता और बेटा–बेटी के समान होना चाहिए ऐसा ही मानना अम्बेडकर का भी है। स्वामी जी के अनुसार बच्चों को ज्यादा लाड़–प्यार से नहीं पढ़ाना चाहिए जो व्यक्ति पढ़ाने का कार्य करते हैं उन्हें विद्वान ही नहीं होना चाहिए बल्कि वे ब्रहम्चारी एवं सदाचारी भी होने चाहिए दयानन्द के शिक्षा–दर्शन के अनुसार विद्यार्थी का शरीर स्वस्थ होना चाहिए।

स्वामी दयानन्द का मानना है कि राष्ट्र के उत्कर्ष का मार्ग है। शिक्षा के मानसरोसर से ही राष्ट्र के विकास की सभी धराएं प्रवाहित होती है। शिक्षा मानव एवं राष्ट्र के जीवन में सर्वोत्तम विभूति है। शिक्षा के द्वारा ही वह एक सुसंस्वृफत मनुष्य बनता है शिक्षा और ज्ञान का विकास ही मनुष्य के समाज और उसी सभ्यता के विकास का मूल प्रेरणा स्त्राोत है।

राजनीति के विषय में

राजनीतिक दृष्टि से भारत में समानता नही थी इसलिए डा0 भीमराव अम्बेडकर ने राजनीतिक में समानता पर बल दिया पिछड़े वर्गो की स्थिति सोचनीय थी उन्होंने इन वर्गो को इस बात के लिए प्रोत्साहित किया कि वे अध्यात्मिक कल्याण की बजाए भौतिक समृधि की और अध्कि ध्यान दे। परन्तु स्वामी दयानन्द भौतिक पर ध्यान देने की बात नहीं कहते थे उनके अनुसार सादा जीवन जीने की कला सर्वश्रेष्ठ थी। इसलिए डा0 अम्बेडकर मानते थे कि इन लोगों को राजनीतिक संरक्षण मिलना अति आवश्यक है महर्षि दयानन्द सरस्वती का संघर्ष विशेषतः विदेशी जातियों के साथ रहा। जब देश में विषय राजनैतिक परिस्थितियाँ चल रही थी। उस समय मुगलों का सूर्य अस्त होने जा रहा था और अंग्रेजों का सूर्य उदय हो रहा था देश में शक्ति स्थापित नहीं हुई थी। अंग्रेजों ने लगभग पूरे देश पर अध्किार कर लिया था और इस प्रकार अंग्रेजों के विदेशी व विध्र्मी शासन के विरूध जो भावना एक सदी से निरूतर विकसित हो रही थी।

अंग्रेजों के विरूद्ध इस संघर्ष में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सव्रिफय रूप से भाग लिया और इस बात पर स्वामी जी ने गम्भीरता के साथ विचार किया और इस विकट समस्या को हल करने के लिए उपाय भी प्रस्तुत किए। भारत की पराधीनता का मुख्य कारण राष्ट्रीयता का अभाव था। सभी समाज सुधर भाव से कार्य करेंगे तो राष्ट्रीय भावना का विकास संभव है ऐसा विचार स्वामी दयानन्द ने व्यक्त किया। स्वामी दयानन्द सरस्वती मानते थे कि भारत में राष्ट्रीय एकता के मूल तत्व विद्यमान है इसलिए इन लोगों को राजनैतिक रूप से सुदृढ़ करके इनमें राष्ट्रीय एकता की भावना का विकास किया जा सकता है।

* Ex Research Scholar, Dakshina Bharar Hindi Parchar Sabha, Chennai

शिक्षा और व्यवसाय :

जीवन के दो पहलू हैं शिक्षा के बिना जीविका सम्भव नहीं और व्यवसाय के बिना शिक्षा व्यर्थ हैं। शिक्षा एवं व्यवसाय सहयोगी है। आर्थिक उन्नति के परिचायक हैं। महर्षि जी ने कहा है कि व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना ही शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य हैं। क्योंकि शिक्षा को पाकर ही मनुष्य स्वावलम्बी बन पाता है। उन्होंने शिक्षा को व्यवसाय के साथ जोड़ने पर महत्त्वपूर्ण बल दिया हैं यदि व्यक्ति में अपनी दैनिक आवश्यकताएं पूर्ण करने का सामर्थ्य नहीं होता तो उसके व्यक्तित्व में भारी अभाव रहता है उसके व्यवहार में भिन्ननाएं आ जाती हैं। हमें यह भी देखना है कि बच्चा व्यवसायिक शिक्षा को व्यापक रूप से ग्रहण करें। आधुनिक वैज्ञानिक प्रगति ने औद्योगिकरण में जटिलता पैदा कर दी हैं आज जो उद्योग और व्यवसाय पनप रहे हैं उनमें वैज्ञानिक प्रगतियों ने बहुत योगदान दिया है। एक शताब्दी पहले व्यवसाय बहुत सीमित मात्राा के थे। उस समय व्यवसाय के लिए शिक्षा की कोई समस्या नहीं थी। घर पर ही पिता अपने बालकों को व्यवसाय सिखा देते थे। और उसी में व्यवसायिक वुफशलता आ जाती थी। लेकिन आजकल वैज्ञानिक युग है आविष्कार से ही व्यवसाय उपलब्ध हैं। जो बच्चों की रूचियों और शक्तियों को सन्तुष्ट करता हैं इसीलिए राष्ट्र को सुरक्षित एवं समृ(बनाए रखने में शिक्षा का महत्त्वपूर्ण रोल हैं।

अंत में हम कह सकते है कि शिक्षा का सम्बन्ध व्यक्ति के विकास से हैं क्योंकि व्यक्ति के विकास पर संस्वृफति का प्रभाव पड़ता हैं शिक्षा का स्वरूप सामाजिक संस्वृफति के स्वरूप से प्रभावित होता हैं। अपनी शिक्षा में व्यक्ति अपने अनुभव का लाभ उठाता हैं। और अपने आचरण एवं व्यवहार को सुव्यवस्थित करने का प्रयास करता हैं। बालक के अच्छे निर्देशन के लिए यह जरूरी है कि जिस वातावरण में वह रहता है उसको वह अच्छी तरह समझ सके।

समाज सुधर के विषय में :–

डा0 भीमराव अम्बेडकर का जीवन एक व्रफान्तिकारी समाज सुधरक के रूप में जाना जाता है। डा0 अम्बेडकर ने हिन्दु र्ध्म में अनेक ग्रन्थों का अध्ययन किया और पाया कि एक विशेष वर्ग के लोगों द्वारा निम्न वर्ग का शोषण किया जा रहा है। डा0 अम्बेडकर समाज में एक मौलिक सुधर चाहते थे इसलिए उन्होंने एक मौलिक सुधरवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। परिवर्तन प्रवृफति का नियम है। इसलिए मानव जीवन में भी परिवर्तन होते रहना चाहिए। डा0 अम्बेडकर में उन महापुरूषों का अनुकरण किया जो सामाजिक स्वतंत्राता एवं प्रजातंत्रा को अध्कि महत्त्व देते थे। डा0 अम्बेडकर का मानना था कि यदि भारत को स्वतंत्रा करना है तो पहले हिन्दू समाज का सुधर होना चाहिए।

डा0 अम्बेडकर का मानना था कि स्वंतत्राता प्राप्त करने के लिए दो शक्तियां अति आवश्यक है सैनिक शक्ति और नैतिक शक्ति। डा0 साहब स्वतंत्राता के विरोधी नहीं थे परन्तु वे देश में ही अपने लोगों द्वारा लादी गई दासता वफो समाप्त करना चाहते थे। भारत में समाज सुधर कार्य में सहायक मित्रा कम है और आलोचक अध्कि है। आलोचनों के दो स्पष्ट वर्ग हैं एक वर्ग में राजनीतिक सुधरक है और दूसरे में समाजवादी। डा0 साहब कहते है कि सामाजिक वुफशलता के बिना कार्य क्षेत्रों में प्रगृति असंभव है। महर्षि दयानन्द देशवासियों के हृदय में ऐसी ही चेतना जगाना चाहते थे। वेद मन्त्रों की राष्ट्रीय भावनापरक व्याख्या करने वाले वे प्रथम महर्षि है। अपने आराध्य देव ईश्वर की राजा–महाराजा और महाध्राज तथा सम्राज आदि के नामों की आराध्ना करने से सुन्दर एवं उत्वृफष्ट परम्परा का सुत्रापात करने में भी उनकी राष्ट्रीय भावना का प्रत्यक्ष परिचय मिलता है।

दयानन्द जी की शिक्षा प(ति में विविध् विषयों का समावेश है। उसमें सदाचार, विधनुराग, शिष्टाचार जैसे सदगुणों को संगीत आदि ललित कलाओं, शरीर विज्ञान पदार्थ विज्ञान आदि विज्ञानों, कला कौशल और राष्ट्रीय भावना, समाज सुधर एवं लोकोपकार जैसे सद्भावों को समुचित स्थान दिया है वस्तुतः महर्षि दयानन्द जी ने शिक्षा जगत् में व्रफान्ति भी की थी।

जाति–प्रथा में सुधरात्मक कार्य :–

डा0 अम्बेडकर जी कहते है कि मुझे खेद है कि जाति–प्रथा के समर्थक ज्यादा मौजूद हैं। इसके समर्थक अनेक है। डा0 अम्बेडकर जी के अनुसार– कोई भी सुधर तब शुरू होता है जब कोई व्यक्ति अपने समुदाय के मानकों, समुदाय की सत्ता और समुदाय के हित से उपर उठकर और उससे अलग अपने विचारों, अपनी धरणाओं और स्वयं की स्वतंत्राता और हित पर अध्कि बल देता है अन्त में हम कह सकते है कि डा0अम्बेडकर एवं स्वामी दयानन्द दोनो के अनुसार शिक्षा का उदेश्य व्यक्ति का विकास करना है क्योंकि व्यक्ति के विकास का संस्वृफति पर प्रभाव पड़ता है। शिक्षा का स्वरूप सामाजिक संस्वृफति के स्वरूप से प्रभावित होता है। अपनी शिक्षा से व्यक्ति अपने अनुभवों का लाभ उठाता है और अपने आचरण एवं व्यवहार को सुव्यवस्थित करने का प्रयास करता है।

संदर्भ– सूचि

1. सपफाया, आर – स्वामी दयानन्द का शिक्षा दर्शन।
2. दयानन्द – सत्यार्थ प्रकाश 75वां संस्करण संवत् 2023 दयानन्द संस्थान नई दिल्ली।
3. दयानन्द उपदेश – अजरी प्रथम संस्करण 1971 दयानन्द संस्थान दिल्ली।
4. स्वामी परमहंश – उपाकर्म, 2003 संस्करण।
5. ध्नंजय कोर – डा0 अम्बेडकर जीवन और मिशन
6. डा0 डी0 आर0 जाटव – डा0 अम्बेडकर का राजनीति दर्शन 1965
7. बी0 आर0 सांपला – युग पुरूष डा0 अम्बेडकर।
8. सुखिया एवं महरोत्रा – शिक्षा सि(ान्त।
9. डा0 डी0 आर0 जाटव – डा0 अम्बेडकर का समाज दर्शन।